रवीन्द्रनाथ टैगोर विश्वविद्यालय, होजाई

हिन्दी विभाग

Post Graduate Diploma in Translation (PGDT)

प्रस्तावना (Preamble):

अनुवाद में स्नातकोत्तर डिप्लोमा (PGDT) पाठ्यक्रम एक वर्ष की अवधि का है जिसमें दो सत्र (सेमेस्टर) सम्मिलित हैं। यह कार्यक्रम विद्यार्थियों को अनुवाद की सैद्धांतिक, भाषावैज्ञानिक तथा व्यावहारिक समझ प्रदान करने के उद्देश्य से तैयार किया गया है। यह पाठ्यक्रम भाषा एवं संस्कृति के अंतर्संबंध को ध्यान में रखते हुए अनुवाद को न केवल एक भाषिक क्रिया बल्कि एक सृजनात्मक, सांस्कृतिक और ज्ञानात्मक प्रक्रिया के रूप में स्थापित करता है। इस पाठ्यक्रम में अनुवाद के विविध आयामों — जैसे साहित्यिक, तकनीकी, प्रशासनिक, मीडिया, और वैज्ञानिक अनुवाद — का व्यावहारिक प्रशिक्षण दिया जाता है। विद्यार्थियों को अनुवाद के सिद्धांत, प्रक्रिया, शब्दावली निर्माण, पारिभाषिक मानकीकरण तथा मशीन अनुवाद जैसे नवीन क्षेत्रों का भी अभ्यास कराया जाता है। इससे वे हिन्दी तथा अंग्रेज़ी (या अन्य भारतीय भाषाओं) के मध्य सटीक, प्रभावी और सांस्कृतिक रूप से उपयुक्त अनुवाद प्रस्तुत करने में सक्षम बनते हैं। यह कार्यक्रम भाषा-शिक्षण, मीडिया, प्रशासन, प्रकाशन, तकनीकी, और अनुसंधान क्षेत्रों में विद्यार्थियों के लिए रोज़गार के नए अवसरों का मार्ग प्रशस्त करता है। साथ ही यह पाठ्यक्रम उन्हें भाषिक दक्षता, सैद्धांतिक गहराई और तकनीकी क्षमता प्रदान कर अनुवाद को एक व्यावसायिक एवं बौद्धिक अनुशासन के रूप में अपनाने हेतु प्रेरित करता है।

पाठ्यक्रम के उद्देश्य (Course Objectives):

- अनुवाद की सैद्धांतिक और व्यावहारिक समझ विकसित करना — विद्यार्थियों को अनुवाद के सिद्धांत, प्रक्रिया, इतिहास, और सांस्कृतिक संदर्भों की गहन जानकारी देना, ताकि वे अनुवाद को एक संगठित अकादमिक अनुशासन के रूप में समझ सकें।
- भाषिक दक्षता और व्यावसायिक कौशल का संवर्धन करना — हिन्दी और अंग्रेज़ी (या अन्य भारतीय भाषाओं) के बीच अनुवाद करते समय भाषिक शुद्धता, शैलीगत सटीकता, और सांस्कृतिक उपयुक्तता की क्षमता विकसित करना।
- प्रशासनिक एवं कार्यालयी अनुवाद की योग्यता प्रदान करना — राजभाषा हिन्दी के प्रयोग और सरकारी, प्रशासनिक, कानूनी एवं तकनीकी पाठों के अनुवाद में दक्षता उत्पन्न करना।

- मीडिया और तकनीकी अनुवाद की समझ विकसित करना — जनसंचार, विज्ञापन, पत्रकारिता और डिजिटल माध्यमों में प्रयुक्त हिन्दी के अनुवाद का प्रशिक्षण देना।

- अनुवाद-प्रौद्योगिकी और मशीन अनुवाद का परिचय देना — आधुनिक सूचना-प्रौद्योगिकी, कंप्यूटर-अनुवाद, शब्दकोश-विज्ञान और पारिभाषिक शब्दावली निर्माण से विद्यार्थियों को परिचित कराना।

- रचनात्मक और समीक्षात्मक दृष्टि का विकास करना — विद्यार्थियों को अनुवाद की आलोचनात्मक विवेचना, मूल्यांकन, और संपादन में निपुण बनाना, ताकि वे अनुवाद को केवल भाषा रूपांतरण नहीं, बल्कि ज्ञान-संवर्धन की प्रक्रिया के रूप में देखें।

- रोज़गारपरक अवसरों का विस्तार करना — इस कार्यक्रम के माध्यम से विद्यार्थियों को राजभाषा विभाग, मीडिया, प्रकाशन, तकनीकी संस्थान, शैक्षणिक अनुसंधान केंद्रों और अंतरराष्ट्रीय संगठनों में रोजगार योग्य बनाना।

पाठ्यक्रम की संरचना (Programme Structure):

- अनुवाद में स्नातकोत्तर डिप्लोमा (PGDT) एक वर्ष की अवधि का पाठ्यक्रम है जिसमें दो सत्र (सेमेस्टर) सम्मिलित हैं।

- प्रत्येक सेमेस्टर में चार सैद्धांतिक और एक प्रायोगिक (परियोजना कार्य) पाठ्यक्रम शामिल हैं।

- कुल कार्यक्रम 40 क्रेडिट्स का है, जिसमें अनुवाद के सैद्धांतिक, भाषिक, तकनीकी और व्यावहारिक पक्षों का समन्वय किया गया है।

❖ अवधि: 1 वर्ष (2 सेमेस्टर)

❖ कुल क्रेडिट: 40

❖ माध्यम: हिन्दी

- **मूल्यांकन प्रणाली (Evaluation System):** पाठ्यक्रम के सभी पत्रों के लिए 100 अंक निर्धारित है। इन सभी पत्रों का मूल्यांकन (परियोजना कार्य के अतिरिक्त) दो स्तरों पर किया जायेगा।

- आंतरिक मूल्यांकन (Assignment + Presentation) – 40 अंक
- लिखित परीक्षा (semester end exam) – 60 अंक

कार्यक्रम संरचना (Programme Structure)

सेमेस्टर	पाठ्यक्रम कोड	पाठ्यक्रम का नाम		क्रेडिट
प्रथम	HIN PGDT 401	प्रयोजनमूलक हिन्दी, भाषाप्रयुक्ति और अनुवाद	Prayojanmulak Hindi, Bhashaprayukti Aur Anuwad	4
	HIN PGDT 402	हिन्दी भाषा की संवैधानिक स्थिति और अनुवाद	Hindi Bhasha ki Sanvaidhanik Stithi aur Anuwad	4
	HIN PGDT 403	अनुवाद विज्ञान और उसका सिद्धांत	Anuwad-vigyan aur Usaka Siddhant	4
	HIN PGDT 404	कार्यालयी हिन्दी और अनुवाद	Karyalayee Hindi aur Anuwad	4
	HIN PGDT 405	परियोजना कार्य-I	Project Work -I	6
द्वितीय	HIN PGDT 451	अनुवाद का व्यावहारिक पक्ष	Anuwad ka Vyavaharik Paksh	4
	HIN PGDT 452	जनसंचार माध्यम और अनुवाद	Jansanchar Madhyam Aur Anuwad	4
	HIN PGDT 453	पारिभाषिक शब्दावली, कोशविज्ञान और अनुवाद	Paribhashik Shabdawali, Koshvigyan Aur Anuwad	4
	HIN PGDT 454	परियोजना कार्य-II	Project Work -II	6

HIN PGDT 401: प्रयोजनमूलक हिन्दी, भाषाप्रयुक्ति और अनुवाद

पाठ्यक्रम उद्देश्य (Course Objectives): यह पाठ्यक्रम विद्यार्थियों को प्रयोजनमूलक हिन्दी के स्वरूप, भाषा-प्रयोग और अनुवाद में इसके व्यावहारिक उपयोग से परिचित कराता है। इसका उद्देश्य विभिन्न कार्यक्षेत्रों—राजभाषा, तकनीकी, वैज्ञानिक, मीडिया और व्यवसायिक—में प्रयोजनमूलक हिन्दी के प्रयोग की दक्षता विकसित करना है।

पाठ्यक्रम परिणाम (Course Outcomes): इस पाठ्यक्रम को पूरा करने के पश्चात विद्यार्थी प्रयोजनमूलक हिन्दी की विविध शैलियों में अनुवाद करने में सक्षम होंगे तथा व्यावहारिक हिन्दी के प्रयोग में दक्षता प्राप्त करेंगे।

Unit I – प्रयोजनमूलक हिन्दी का स्वरूप और उपादेयता

- प्रयोजनमूलक हिन्दी की संकल्पना, उद्देश्य और उपयोगिता।
- सामान्य हिन्दी और प्रयोजनमूलक हिन्दी में अंतर।
- शुद्ध, सरल और प्रभावी हिन्दी लेखन के सिद्धांत।

Unit II – भाषा और संप्रेषण के उपकरण

- संप्रेषण के घटक, भाषा के कार्य और प्रयोग।
- शब्दावली, पदबंध और वाक्य संरचना की व्यावहारिक दृष्टि।
- शुद्धता, सटीकता और व्यावसायिक भाषा का प्रयोग।

Unit III – प्रयोजनमूलक हिन्दी की शैलियाँ

- कार्यालयी, तकनीकी, वैज्ञानिक, पत्रकारिक, विज्ञापनिक और शैक्षणिक हिन्दी।
- भाषा और प्रसंग के अनुसार शैली-चयन।
- उदाहरण सहित व्यावहारिक लेखन अभ्यास।

Unit IV – प्रयोजनमूलक हिन्दी में अनुवाद की समस्याएँ और समाधान

- वाक्य संरचना, मुहावरे, पारिभाषिक शब्दों की समस्या।
- क्षेत्रीय भाषा और अंग्रेज़ी से हिन्दी अनुवाद की व्यावहारिक चुनौतियाँ।
- अनुवाद के सिद्धांत और शैलीगत सामंजस्य।

Unit V – प्रयोजनमूलक अनुवाद के अभ्यास

- कार्यालयी पत्राचार, विज्ञापन, सूचनाएँ, रिपोर्ट और निबंध के अनुवाद।
- भाषा की सरलता और सटीकता का अभ्यास।

संदर्भ ग्रंथ (References):

1. कैलाशनाथ पाण्डेय – प्रयोजनमूलक हिन्दी की नई भूमिका
2. डॉ. ओमप्रकाश सिंगल – प्रयोजनमूलक व्यावहारिक हिन्दी
3. डॉ. रघुनन्दन प्रसाद – प्रयोजनमूलक हिन्दी
4. डॉ. विजयपाल सिंह – कार्यालयी हिन्दी का स्वरूप

HIN PGDT 402: हिन्दी भाषा की संवैधानिक स्थिति और अनुवाद

पाठ्यक्रम उद्देश्य (Course Objectives): यह पाठ्यक्रम विद्यार्थियों को हिन्दी भाषा की संवैधानिक स्थिति, उसकी राजभाषा के रूप में भूमिका, और अनुवाद के क्षेत्र में इसके व्यावहारिक प्रयोग से परिचित कराता है। इसका उद्देश्य विद्यार्थियों में भाषा-नीति, राजभाषा प्रावधानों तथा प्रशासनिक अनुवाद की गहन समझ विकसित करना है, ताकि वे सरकारी, तकनीकी और शैक्षणिक क्षेत्रों में प्रभावी रूप से हिन्दी का प्रयोग कर सकें।

पाठ्यक्रम परिणाम (Course Outcomes):

- विद्यार्थी संविधान में निहित राजभाषा प्रावधानों को समझेंगे।
- वे राजभाषा हिन्दी के प्रयोग और अनुवाद की व्यावहारिक समस्याओं का विश्लेषण कर सकेंगे।
- प्रशासनिक हिन्दी, नीति-निर्माण और राजभाषा के विकास में अनुवाद की भूमिका को पहचानेंगे।

Unit I – हिन्दी का ऐतिहासिक विकास और संवैधानिक स्वरूप

- हिन्दी का उद्भव: अपभ्रंश, प्राकृत और संस्कृत से विकास यात्रा।
- आधुनिक हिन्दी का निर्माण और मानकीकरण।
- संविधान सभा में राजभाषा पर वाद-विवाद और हिन्दी का चयन।

Unit II – संविधान में राजभाषा सम्बन्धी प्रावधान (अनुच्छेद 343–351)

- अनुच्छेद 343 से 351 तक का विस्तृत अध्ययन।
- केन्द्र और राज्यों में राजभाषा नीति का क्रियान्वयन।
- संविधान के अष्टम अनुसूची में सम्मिलित भाषाओं की भूमिका।
- द्विभाषिकता और बहुभाषिकता की भारतीय स्थिति।

Unit III – राजभाषा नीति, अधिनियम और आयोग

- राजभाषा अधिनियम (1963, 1976) और उसका ऐतिहासिक संदर्भ।
- राजभाषा विभाग, संसदीय राजभाषा समिति और वैज्ञानिक एवं तकनीकी शब्दावली आयोग की भूमिका।
- राजभाषा प्रचार और प्रशिक्षण संस्थानों का योगदान।

Unit IV – राजभाषा हिन्दी और अनुवाद का व्यावहारिक पक्ष

- सरकारी पत्राचार, नोटिंग-ड्राफ्टिंग, परिपत्र, अधिसूचना का अनुवाद।
- प्रशासनिक दस्तावेज़ों में हिन्दी के प्रयोग की कठिनाइयाँ और समाधान।
- राजभाषा के तकनीकी सशक्तीकरण में अनुवाद का योगदान।

Unit V – राजभाषा हिन्दी का आधुनिकीकरण और अनुवाद की दिशा

- सूचना-प्रौद्योगिकी के युग में राजभाषा हिन्दी की भूमिका।
- ई-शासन, डिजिटल अनुवाद और मशीन-अनुवाद की संभावनाएँ।
- राजभाषा हिन्दी के प्रचार-प्रसार में अनुवाद का भविष्य।

संदर्भ ग्रंथ (Reference Books):

1. डॉ. मल्लिक मोहम्मद – राजभाषा हिन्दी: विकास के विविध आयाम
2. डॉ. उदयनारायण तिवारी – हिन्दी भाषा का उद्भव और विकास
3. डॉ. राजमणि – हिन्दी भाषा: इतिहास और स्वरूप
4. भारत सरकार – राजभाषा अधिनियम एवं नियमावली (1963, 1976)
5. राजभाषा विभाग, गृहमंत्रालय – वार्षिक राजभाषा रिपोर्ट्स

HIN PGDT 403: अनुवाद विज्ञान और उसका सिद्धांत

पाठ्यक्रम उद्देश्य (Course Objectives): यह पाठ्यक्रम विद्यार्थियों को अनुवाद की वैज्ञानिक प्रक्रिया, उसके सैद्धांतिक आधार, प्रकारों और ऐतिहासिक विकास की जानकारी प्रदान करता है। इसका उद्देश्य अनुवाद को एक व्यवस्थित शास्त्रीय एवं व्यावहारिक अनुशासन के रूप में स्थापित करना है। साथ ही यह पाठ्यक्रम विद्यार्थियों को अनुवाद के मूल्यांकन, समकक्षता और सांस्कृतिक अंतःप्रभावों की पहचान कराने में सहायक होगा।

पाठ्यक्रम परिणाम (Course Outcomes):

- विद्यार्थी अनुवाद के सिद्धांतों, प्रकारों और उद्देश्यों को समझ सकेंगे।
- वे अनुवाद को केवल भाषिक प्रक्रिया न मानकर सांस्कृतिक एवं सृजनात्मक क्रिया के रूप में देखेंगे।
- वे विभिन्न अनुवाद-परंपराओं (भारतीय और पाश्चात्य) का तुलनात्मक अध्ययन करने में सक्षम होंगे।
- अनुवाद की समस्याओं, सीमाओं और गुणवत्ता-मूल्यांकन के मानकों को समझ सकेंगे।

Unit I – अनुवाद का स्वरूप, परिभाषा और उपादेयता

- अनुवाद की परिभाषा, उद्देश्य और कार्यक्षेत्र।
- भाषिक, सांस्कृतिक और साहित्यिक दृष्टि से अनुवाद का महत्त्व।
- अनुवाद और रूपांतरण (Transcreation) का अंतर।
- अनुवाद का विकास: भारतीय परंपरा से आधुनिक युग तक।

Unit II – अनुवाद की सैद्धांतिक पृष्ठभूमि

- अनुवाद के प्रमुख सिद्धांत: शब्द-केन्द्रित, अर्थ-केन्द्रित और भाव-केन्द्रित अनुवाद।
- पाश्चात्य सिद्धांतकार: नीडा, कैटफोर्ड, हाउस, जेकब्सन।
- भारतीय परिप्रेक्ष्य: तुलसी, कबीर, संस्कृत अनुवाद परंपरा।
- अनुवाद में शैली और अर्थ-संरचना का संबंध।

Unit III – अनुवाद के प्रकार

- साहित्यिक अनुवाद: कविता, कहानी, उपन्यास और नाटक।
- तकनीकी अनुवाद: वैज्ञानिक, तकनीकी, वाणिज्यिक एवं कानूनी दस्तावेज़।
- पत्रकारिक एवं मीडिया अनुवाद।
- सांस्कृतिक और धार्मिक अनुवाद के विशेष आयाम।

Unit IV – अनुवाद की प्रक्रिया और व्यवहार

- अनुवाद की चरणबद्ध प्रक्रिया: स्रोत-पाठ का विश्लेषण, रूपांतरण, संपादन और समीक्षा।
- भाषा-संरचना, अर्थ-संरचना और शैलीगत समरूपता।
- 'समकक्षता' (Equivalence) और 'असंरूपता' (Untranslatability) के सिद्धांत।
- अनुवाद में सटीकता, सृजनात्मकता और पाठ-संवेदनशीलता का संतुलन।

Unit V – अनुवाद की समस्याएँ, सीमाएँ और गुणवत्ता मूल्यांकन

- भाषिक, सांस्कृतिक और शैलीगत समस्याएँ।
- अनुवाद की सीमाएँ: वाक्य-रचना, अर्थानुवाद, मुहावरेदार प्रयोग।
- अनुवाद की गुणवत्ता मापने के मानक और मूल्यांकन की विधियाँ।
- अनुवाद की नैतिकता और अनुवादक की भूमिका।

संदर्भ ग्रंथ (Reference Books):

1. डॉ. रीतारानी पालीवाल – अनुवाद प्रक्रिया एवं परिदृश्य
2. डॉ. बृजनाथ तिवारी – अनुवाद विज्ञान
3. सुनीता जोशी – अनुवाद अध्ययन: सिद्धांत और प्रयोग
4. Susan Bassnett – Translation Studies
5. J.C. Catford – A Linguistic Theory of Translation
6. Eugene Nida – Language, Culture and Translating

HIN PGDT 404: कार्यालयी हिन्दी और अनुवाद

पाठ्यक्रम उद्देश्य (Course Objectives): इस पाठ्यक्रम का उद्देश्य विद्यार्थियों को सरकारी, अर्द्ध-सरकारी और निजी संस्थाओं में हिन्दी के व्यावहारिक उपयोग का प्रशिक्षण देना है। यह पाठ्यक्रम कार्यालयी पत्राचार, रिपोर्ट, ज्ञापन, अधिसूचना, आदेश, सूचना और अन्य प्रशासनिक दस्तावेज़ों के लेखन एवं अनुवाद की प्रक्रिया को व्यावहारिक दृष्टि से समझने में सहायक होगा। साथ ही, यह विद्यार्थियों को "राजभाषा हिन्दी" के प्रामाणिक प्रयोग और भाषा-शुद्धता के सिद्धांतों से परिचित कराएगा।

पाठ्यक्रम परिणाम (Course Outcomes):

- विद्यार्थी सरकारी कार्यालयों में हिन्दी के प्रयोग और प्रशासनिक संप्रेषण की प्रक्रिया को समझेंगे।
- वे कार्यालयी दस्तावेज़ों के लेखन एवं अनुवाद में दक्षता प्राप्त करेंगे।
- विद्यार्थी रिपोर्ट, ज्ञापन, अधिसूचना, टिप्पण और नोटिंग जैसे दस्तावेज़ों के सही प्रारूप से परिचित होंगे।
- हिन्दी राजभाषा प्रयोग के नियमों और मानकीकरण की समझ विकसित करेंगे।

Unit I – कार्यालयी हिन्दी की संकल्पना और विकास

- कार्यालयी हिन्दी का अर्थ, उद्देश्य और स्वरूप।
- हिन्दी का प्रशासनिक भाषा के रूप में विकास।
- राजभाषा नीति और कार्यालयी हिन्दी के मानक।
- कार्यालयी हिन्दी बनाम राजभाषा हिन्दी: तुलनात्मक विवेचन।

Unit II – कार्यालयी लेखन की शैलियाँ और प्रारूप

- पत्राचार, ज्ञापन, अधिसूचना, परिपत्र, रिपोर्ट और टिप्पण का प्रारूप।
- भाषा की सटीकता, संक्षिप्तता और स्पष्टता के सिद्धांत।
- उदाहरण सहित सरकारी और प्रशासनिक पत्रों का लेखन अभ्यास।
- राजभाषा नियमों के अनुसार पत्रों की संरचना।

Unit III – कार्यालयी अनुवाद का स्वरूप और विधियाँ

- अंग्रेज़ी से हिन्दी में कार्यालयी अनुवाद की प्रक्रिया।
- प्रशासनिक शब्दावली और पारिभाषिक मानकीकरण।
- हिन्दी तकनीकी शब्दावली आयोग की भूमिका।
- अनुवाद की त्रुटियाँ और उनके निवारण के उपाय।

Unit IV – कार्यालयी हिन्दी का व्यावहारिक प्रशिक्षण

- सरकारी दस्तावेज़ों, विज्ञप्तियों, अधिसूचनाओं और नीतिगत पत्रों के अनुवाद का अभ्यास।
- सूचना, आदेश, अनुशासनात्मक नोटिस आदि के अनुवाद का प्रशिक्षण।
- रिपोर्ट लेखन और बैठक विवरणिका (Minutes) तैयार करने की विधि।
- कार्यालयी हिन्दी में ई-शासन और डिजिटलीकरण की भूमिका।

Unit V – राजभाषा हिन्दी और आधुनिक प्रशासन

- राजभाषा के आधुनिकीकरण में अनुवाद की भूमिका।
- हिन्दी कम्प्यूटिंग, यूनिकोड, ट्रांसलिटरेशन और ई-कार्यालय की अवधारणा।
- प्रशासनिक हिन्दी में मशीन अनुवाद और तकनीकी सहायता।
- राजभाषा हिन्दी के भविष्य की दिशा।

संदर्भ ग्रंथ (Reference Books):

1. डॉ. विजयपाल सिंह – कार्यालयी हिन्दी: स्वरूप और व्यावहार
2. डॉ. मनुराम सकलानी – प्रशासन में हिन्दी
3. डॉ. हेमलता चतुर्वेदी – कार्यालयी पत्र व्यवहार
4. भारत सरकार, गृह मंत्रालय – राजभाषा नियमावली एवं कार्यान्वयन रिपोर्ट्स
5. वैज्ञानिक एवं तकनीकी शब्दावली आयोग – कार्यालयी हिन्दी कोश

HIN PGDT 405: परियोजना कार्य–I (Translation Project–I)

पाठ्यक्रम उद्देश्य (Course Objectives): इस परियोजना कार्य का उद्देश्य विद्यार्थियों को अनुवाद के व्यावहारिक पक्ष में प्रत्यक्ष अनुभव प्रदान करना है। यह विद्यार्थियों को अनुवाद की प्रक्रिया, उपकरणों और विधियों से परिचित कराता है तथा उन्हें वास्तविक अनुवाद कार्य करने के लिए प्रशिक्षित करता है। इस कार्य के माध्यम से विद्यार्थी किसी निर्धारित विषय-वस्तु का चयन कर अंग्रेज़ी अथवा किसी क्षेत्रीय भाषा से हिन्दी में अनुवाद प्रस्तुत करेंगे।

पाठ्यक्रम परिणाम (Course Outcomes):

- विद्यार्थी अनुवाद की प्रक्रिया को व्यावहारिक रूप में समझेंगे।
- वे भाषा, शैली और प्रसंग के अनुरूप अनुवाद तैयार करने में दक्ष होंगे।
- परियोजना कार्य के माध्यम से अनुवाद में प्रयोग होने वाले उपकरणों (terminology lists, dictionaries, CAT tools) का उपयोग सीखेंगे। विद्यार्थी आत्मनिर्भर अनुवादक के रूप में कार्य करने की क्षमता अर्जित करेंगे।

परियोजना कार्य की रूपरेखा (Structure of the Project):

1. **परियोजना का चयन (Selection of Project Topic)**

- विद्यार्थी किसी विषय क्षेत्र का चयन करेंगे – जैसे साहित्य, विज्ञान, तकनीकी, वाणिज्य, सामाजिक विज्ञान, प्रशासन, मीडिया आदि।
- विषय चयन विभागीय परामर्शदाता (Supervisor) के मार्गदर्शन में किया जाएगा।
- अनुवाद हेतु स्रोत-पाठ (Source Text) की भाषा अंग्रेज़ी या संविधान-मान्य कोई क्षेत्रीय भाषा होगी।

2. **परियोजना की प्रकृति (Nature of Work)**

- अनुवादित सामग्री लगभग 50 पृष्ठों (10,000–12,000 शब्द) की होगी।
- विद्यार्थी को मूल पाठ के साथ हिन्दी अनुवाद प्रस्तुत करना होगा।
- अनुवाद के साथ एक भूमिका (Introduction) दी जाएगी, जिसमें अनुवाद के सिद्धांत, प्रक्रिया और शैलीगत विकल्पों पर चर्चा होगी।

3. **परियोजना की प्रक्रिया (Methodology)**:

- विषय और स्रोत-पाठ की स्वीकृति विभाग द्वारा की जाएगी।
- अनुवाद के दौरान भाषा-शुद्धता, पारिभाषिक सटीकता और प्रसंगानुकूलता का पालन आवश्यक होगा।
- परियोजना के दौरान विद्यार्थी को अपने पर्यवेक्षक से नियमित मार्गदर्शन लेना होगा।

4. **मूल्यांकन प्रणाली (Evaluation System)**

- परियोजना कार्य का मूल्यांकन दो भागों में किया जाएगा —

  (a) लिखित रिपोर्ट (Written Translation Work) – 60 अंक

  (b) मौखिक परीक्षा (Viva-Voce) – 40 अंक

  कुल अंक: 100

मौखिक परीक्षा में विद्यार्थी से अनुवाद प्रक्रिया, शब्द चयन, अनुवाद उपकरण और शैलीगत निर्णयों पर प्रश्न पूछे जाएंगे।

5. प्रस्तुति का प्रारूप (Presentation Format)

- A4 साइज पेपर, 1.5 लाइन स्पेसिंग, Unicode हिन्दी फॉन्ट (Arial/Mangal/Devanagari) ।
- रिपोर्ट को विभाग में प्रिंट और डिजिटल दोनों प्रारूपों में जमा करना आवश्यक है।
- प्रत्येक परियोजना के साथ पर्यवेक्षक का Certificate of Guidance संलग्न होगा।

संदर्भ ग्रंथ (Reference Books):

1. डॉ. रीतारानी पालीवाल – अनुवाद प्रक्रिया एवं परिदृश्य
2. Susan Bassnett – Translation Studies
3. Eugene Nida – Language, Culture and Translating
4. डॉ. बृजनाथ तिवारी – अनुवाद विज्ञान
5. Dr. R.K. Joshi – Practical Translation Guide

HIN PGDT 451– : अनुवाद का व्यवहारिक पक्ष

पाठ्यक्रम उद्देश्य (Course Objectives): यह पाठ्यक्रम विद्यार्थियों को विभिन्न प्रकार के पाठों (साहित्यिक, प्रशासनिक, तकनीकी, पत्रकारिक आदि) के व्यवहारिक अनुवाद का प्रशिक्षण देता है। इसका उद्देश्य विद्यार्थियों को व्यावहारिक स्तर पर सटीकता, संप्रेषणीयता और शैलीगत संतुलन प्राप्त कराना है।

पाठ्यक्रम परिणाम (Course Outcomes):

- विद्यार्थी साहित्यिक और असाहित्यिक पाठों के अनुवाद में भिन्नताओं को समझेंगे।
- वे व्याकरणिक और सांस्कृतिक संदर्भों के अनुसार सटीक अनुवाद करने में सक्षम होंगे।
- अनुवाद में प्रयोग होने वाले व्यावहारिक उपकरणों और संदर्भ सामग्रियों का कुशल उपयोग सीखेंगे।

Unit I – साहित्यिक अनुवाद

- कविता, कहानी, निबंध, नाटक आदि का अनुवाद।
- रचनात्मकता और शैलीगत समकक्षता का संतुलन।
- साहित्यिक अनुवाद की विशेषताएँ और चुनौतियाँ।

Unit II – कार्यालयी अनुवाद

- सरकारी पत्राचार, रिपोर्ट, ज्ञापन, अधिसूचना आदि का अनुवाद।
- प्रशासनिक शब्दावली और पदबंधों का प्रयोग।
- राजभाषा नीति के अनुरूप अनुवाद।

Unit III – तकनीकी और वैज्ञानिक अनुवाद

- तकनीकी दस्तावेज़, वैज्ञानिक रिपोर्ट, बैंकिंग, बीमा और वाणिज्यिक संप्रेषण का अनुवाद।
- पारिभाषिक शब्दावली का मानकीकरण।
- तकनीकी शैली में सटीकता और संक्षिप्तता।

Unit IV – पत्रकारिक और मीडिया अनुवाद

- समाचार, विज्ञापन, प्रेस-विज्ञप्ति, रिपोर्टिंग का अनुवाद।
- शीर्षक, भाषा-शैली और जनसंचार के सिद्धांत।
- सामाजिक और राजनीतिक सन्दर्भों में अनुवाद की भूमिका।

Unit V – अनुवाद का अभ्यास और मूल्यांकन

- व्यावहारिक अनुवाद अभ्यास (वास्तविक दस्तावेजों पर)।
- सहकर्मी मूल्यांकन (Peer Review) और संपादन प्रक्रिया।
- गुणवत्ता-मूल्यांकन और संपादन के मानक।

संदर्भ ग्रंथ (Reference Books):

1. डॉ. बृजनाथ तिवारी – अनुवाद विज्ञान
2. Susan Bassnett – Translation Studies
3. डॉ. ओमप्रकाश सिंगल – प्रयोजनमूलक हिन्दी
4. डॉ. रीतारानी पालीवाल – अनुवाद प्रक्रिया एवं परिदृश्य

HIN PGDT 452: जनसंचार माध्यम और अनुवाद

पाठ्यक्रम उद्देश्य (Course Objectives): यह पाठ्यक्रम विद्यार्थियों को मीडिया, पत्रकारिता, विज्ञापन और जनसंचार के क्षेत्र में अनुवाद की भूमिका और प्रयोग सिखाता है। इसका उद्देश्य विद्यार्थियों को आधुनिक मीडिया की भाषा, शैली और तकनीक से परिचित कराना है।

पाठ्यक्रम परिणाम (Course Outcomes):

- विद्यार्थी जनसंचार माध्यमों की भाषा-विशेषताओं को समझेंगे।
- वे समाचार, विज्ञापन और सोशल मीडिया सामग्री का प्रभावी अनुवाद कर सकेंगे।
- विद्यार्थी मीडिया-विशिष्ट शैली और संप्रेषणीयता में दक्ष होंगे।

Unit I – जनसंचार माध्यमों की भूमिका और स्वरूप

- जनसंचार की परिभाषा और महत्त्व।
- समाचार पत्र, रेडियो, टीवी और डिजिटल मीडिया का विकास।
- जनसंचार में भाषा का स्वरूप और प्रभाव।

Unit II – श्रव्य माध्यम (Audio Media)

- रेडियो समाचार, वार्तालाप, साक्षात्कार और उद्घोषणा लेखन।
- रेडियो के लिए हिन्दी अनुवाद की तकनीक।
- बोलचाल की भाषा बनाम लिखित भाषा की भिन्नता।

Unit III – दृश्य-श्रव्य माध्यम (Audio-Visual Media)

- टेलीविजन समाचार, रिपोर्ट, संवाद और पटकथा अनुवाद।
- सबटाइटलिंग और डबिंग की प्रक्रिया।
- दृश्य-माध्यम में अनुवाद की चुनौतियाँ।

Unit IV – विज्ञापन और जनसम्पर्क अनुवाद

- विज्ञापन लेखन की भाषा और रचनात्मकता।
- सांस्कृतिक सन्दर्भों में विज्ञापन अनुवाद की रणनीतियाँ।
- जनसम्पर्क दस्तावेज़ों और अभियानों में अनुवाद।

Unit V – सोशल मीडिया और डिजिटल अनुवाद

- वेबसाइट, ब्लॉग, ऑनलाइन पोस्ट और सोशल मीडिया संदेशों का अनुवाद।
- डिजिटल अनुवाद उपकरण और मशीन अनुवाद का प्रयोग।
- मीडिया अनुवाद की नैतिकता और दायित्व।

संदर्भ ग्रंथ (Reference Books):

1. डॉ. हर्षदेव – सामाजिक मीडिया शब्दकोश
2. डॉ. कैलाशनाथ पाण्डेय – प्रयोजनमूलक हिन्दी की नई भूमिका
3. Susan Bassnett – Media Translation Studies
4. डॉ. रीतारानी पालीवाल – अनुवाद प्रक्रिया एवं परिदृश्य

HIN PGDT 453: पारिभाषिक शब्दावली, कोशविज्ञान और अनुवाद

पाठ्यक्रम उद्देश्य (Course Objectives): इस पाठ्यक्रम का उद्देश्य विद्यार्थियों को पारिभाषिक शब्दावली निर्माण, मानकीकरण और कोशविज्ञान के सिद्धांतों से अवगत कराना है। यह अनुवाद के उस वैज्ञानिक पहलू को समझने में सहायता करता है जिसमें भाषा, शब्दार्थ और शब्दकोश निर्माण की भूमिका प्रमुख होती है। साथ ही, विद्यार्थियों को हिन्दी तकनीकी शब्दावली के विकास और उसके अनुवाद में उपयोग का प्रशिक्षण देना है।

पाठ्यक्रम परिणाम (Course Outcomes):

- विद्यार्थी पारिभाषिक शब्दावली की संकल्पना, निर्माण और उपयोग को समझेंगे।
- वे हिन्दी में वैज्ञानिक और तकनीकी शब्दावली के मानकीकरण की प्रक्रिया से परिचित होंगे।
- विद्यार्थी विभिन्न प्रकार के कोशों (शब्दकोश, पारिभाषिक कोश, द्विभाषिक कोश आदि) की संरचना और प्रयोजन को जानेंगे।
- वे पारिभाषिक शब्दों के सटीक और प्रभावी अनुवाद में दक्ष होंगे।

Unit I – पारिभाषिक शब्दावली की संकल्पना और स्वरूप

- पारिभाषिक शब्द की परिभाषा, आवश्यकता और महत्त्व।
- सामान्य शब्द और पारिभाषिक शब्द में अंतर।
- पारिभाषिक शब्दों के निर्माण के सिद्धांत।
- विभिन्न विषय क्षेत्रों (विज्ञान, तकनीक, प्रशासन) में शब्दावली का स्वरूप।

Unit II – हिन्दी तकनीकी शब्दावली का विकास और मानकीकरण

- हिन्दी तकनीकी शब्दावली आयोग की स्थापना और कार्य।
- तकनीकी, वैज्ञानिक और प्रशासनिक शब्दावली के मानकीकरण की प्रक्रिया।
- हिन्दी तकनीकी शब्दावली की प्रमुख विशेषताएँ।
- पारिभाषिक शब्दों के अनुवाद में चुनौतियाँ और समाधान।

Unit III – कोशविज्ञान की संकल्पना और प्रकार

- कोशविज्ञान (Lexicography) का अर्थ और उद्देश्य।
- कोशों के प्रकार — एकभाषिक, द्विभाषिक, पारिभाषिक, विषयगत और इलेक्ट्रॉनिक कोश।
- शब्द-संग्रह, शब्द-चयन और अर्थ-निर्धारण की विधियाँ।
- कोश निर्माण की व्यावहारिक प्रक्रिया।

Unit IV – हिन्दी कोश निर्माण की परंपरा और प्रमुख कोशकार

- हिन्दी शब्दकोशों का इतिहास — 'शब्दसागर', 'हिन्दी शब्दानुशासन', 'विश्व हिन्दी कोश' आदि।
- प्रमुख कोशकार — श्रीधर पाठक, रघुनाथ सिंह, सत्यदेव त्रिपाठी आदि।
- आधुनिक कोश निर्माण में डिजिटल प्रौद्योगिकी का प्रयोग।
- द्विभाषिक और बहुभाषिक कोशों की संरचना।

Unit V – पारिभाषिक शब्दों का अनुवाद अभ्यास और प्रयोग

- अंग्रेज़ी से हिन्दी पारिभाषिक शब्दों के अनुवाद के सिद्धांत।
- सटीकता, अर्थ-संप्रेषण और सांस्कृतिक सन्दर्भ का समायोजन।
- अनुवाद अभ्यास: वैज्ञानिक, तकनीकी और प्रशासनिक शब्दावली।
- शब्दकोश और ऑनलाइन टूल्स (CAT Tools) का प्रयोग।

संदर्भ ग्रंथ (Reference Books):

1. डॉ. एस.एन. शर्मा – पारिभाषिक शब्दावली और कोशविज्ञान
2. डॉ. ओमप्रकाश सिंगल – प्रयोजनमूलक हिन्दी और शब्दावली
3. वैज्ञानिक एवं तकनीकी शब्दावली आयोग – पारिभाषिक शब्दकोश (खंड I–X)
4. डॉ. बृजनाथ तिवारी – अनुवाद विज्ञान
5. M.A.K. Halliday – Lexicology and Corpus Linguistics

HIN PGDT 454: परियोजना कार्य–II (Translation Project–II)

पाठ्यक्रम उद्देश्य (Course Objectives): इस पाठ्यक्रम का उद्देश्य विद्यार्थियों को हिन्दी से अंग्रेज़ी या किसी अन्य भारतीय भाषा में अनुवाद करने की व्यावहारिक दक्षता प्रदान करना है। यह विद्यार्थियों को द्विभाषिक अनुवाद की प्रक्रिया, शैलीगत अंतर और सांस्कृतिक रूपांतरण की बारीकियों से परिचित कराता है। साथ ही यह परियोजना विद्यार्थियों को व्यावसायिक अनुवादक के रूप में कार्य करने की दक्षता प्रदान करती है।

पाठ्यक्रम परिणाम (Course Outcomes):

- विद्यार्थी हिन्दी से अन्य भाषाओं में अनुवाद की प्रक्रिया को समझेंगे।
- वे अनुवाद के दौरान भाषा, संस्कृति और संदर्भ के अनुसार उपयुक्त रूपांतरण कर सकेंगे।
- परियोजना के माध्यम से विद्यार्थी पेशेवर अनुवाद की नैतिकता, उपकरणों और प्रस्तुति के मानक सीखेंगे।
- यह परियोजना अनुवादक के रूप में स्वतंत्र कार्य करने की क्षमता विकसित करेगी।

परियोजना कार्य की रूपरेखा (Structure of the Project):

परियोजना का उद्देश्य (Aim of the Project)

- इस परियोजना का उद्देश्य हिन्दी स्रोत-पाठ को अंग्रेज़ी या किसी अन्य भारतीय भाषा में अनूदित करना हैं, ताकि विद्यार्थी स्रोत और लक्ष्य भाषा के बीच सांस्कृतिक एवं भाषिक अंतःक्रिया को व्यवहार में समझ सकें।

परियोजना की प्रकृति (Nature of Work):

- हिन्दी से अंग्रेज़ी या अन्य भारतीय भाषा में लगभग 50 पृष्ठों (10,000–12,000 शब्द) की सामग्री का अनुवाद किया जाएगा।
- अनुवादित पाठ का विषय साहित्यिक, तकनीकी, प्रशासनिक या मीडिया से संबंधित हो सकता है।
- अनुवाद के साथ एक संक्षिप्त भूमिका (Introduction) और विश्लेषणात्मक टिप्पणी (Critical Note) प्रस्तुत करना अनिवार्य है।

प्रक्रिया (Methodology):

- विद्यार्थी पहले विभागीय मार्गदर्शक (Supervisor) के साथ विषय और स्रोत-पाठ का चयन करेंगे।
- अनुवाद में भाषा की सटीकता, भाव-समकक्षता और शैलीगत उपयुक्तता का ध्यान रखा जाएगा।
- आधुनिक अनुवाद उपकरण (CAT Tools, Online Terminology Databases, Machine Translation Aids) का उपयोग प्रोत्साहित किया जाएगा।
- प्रत्येक विद्यार्थी को नियमित रूप से प्रगति रिपोर्ट प्रस्तुत करनी होगी।

मूल्यांकन प्रणाली (Evaluation System):

- लिखित अनुवाद कार्य: 60 अंक
- मौखिक परीक्षा (Viva-Voce): 40 अंक
- कुल अंक: 100

मौखिक परीक्षा में विद्यार्थी से अनुवाद के दौरान लिए गए भाषिक निर्णयों, शब्द-चयन, शैलीगत कारणों और संदर्भ-व्याख्या पर प्रश्न पूछे जाएंगे।

प्रस्तुति का प्रारूप (Presentation Format):

- A4 साइज पेपर, 1.5 लाइन स्पेसिंग, Unicode Devanagari फॉन्ट (जैसे Mangal या Devanagari)।
- स्रोत पाठ और लक्ष्य पाठ (अनुवाद) समान क्रम में प्रस्तुत किए जाएँगे।
- रिपोर्ट के साथ Supervisor Certificate, Declaration और Bibliography संलग्न होगी।

संदर्भ ग्रंथ (Reference Books):

1. डॉ. रीतारानी पालीवाल – अनुवाद प्रक्रिया एवं परिदृश्य
2. डॉ. बृजनाथ तिवारी – अनुवाद विज्ञान
3. Susan Bassnett – Translation Studies
4. Mona Baker – Routledge Encyclopedia of Translation Studies
5. Eugene Nida – Language, Culture and Translating